डा० आभा गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर - हिन्दी राजकीय महाविद्यालय, जक्खिनी-वाराणसी

विषय-हिन्दी

नई शिक्षा नीति - 2020

बी.ए.- प्रथम सेमेस्टर (मेजर)

शीर्षक - निराला का जीवन परिचय एवं काव्य-सौन्दर्य

स्वघोषणा

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक/ वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतया प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे. और इसका प्रयोग व्यक्तिगत

ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है |

निराला का जीवन परिचय एवं काव्य सौन्दर्य

1-जीवन परिचय- सूर्यकान्त निपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में 21 फरवरी सन् 1899 में हुआ था। उनके पिता पंडित राम सहाय तिवारी मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे। निराला जी का विवाह 14 वर्ष की आयु में मनोहरा देवी के साथ सम्पन्न हुआ था। उनकी मृत्यु 15 अक्टूबर 1961 में हुई थी |

2- शिक्षा - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की
प्रारम्भिक शिक्षा मेदिनीपुर (पं. बंगाल) से हुई थी। उन्होंने हाईस्कूल तक की शिक्षा वहीं से प्राप्त की। निराला जी हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, एवं संस्कृत भाषा में निपुण थे। वे दार्शनिक प्रवृत्ति के थे |

3- प्रमुख रचनाएँ-

काव्य संग्रह-अनामिका, परिमल, गीतिका, नए पत्ते, कुकुरमुत्ता, संध्या, काकली आदि।

उपन्यास- अप्सरा, अलका, प्रभावती,
निरुपमा, बिल्लेसुर बकरिया, काले कारनामे आदि

कहानी संग्रह- लिली, सुकुल की बीवी, चतुरी
चमार, आदि।

निबन्ध और आलोचना - रवीन्द्र कविता कानन, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन आदि।

काव्यगत विशेषता - निराला जी छायावादी कवियों में से एक प्रमुख कवि थे इन्होंने विविध विषयों पर अपनी कविताएं लिखी है, जैसे- श्रृंगार, राष्ट्रप्रेम, रहस्यवाद प्रकृति-वर्णन, शोषण के विरुद्ध विद्रोह एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति आदि । इनके काव्य की निम्नलिखित विशेषताएं है -

1.सामाजिक व्यवस्था के प्रति असन्तोष - उस युग में जनजीवन अत्यन्त संत्रस्त रहा है। पूँजीपति वर्ग सामाजिक रूढ़ियों तथा थोथी मान्यताओं द्वारा भोली-भाली जनता को अपने जाल में फँसाकर उनका शोषण करता है। देश की भूखमरी और दरिद्रता ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है।

2) शोषितों के प्रति संवेदना - निराला जी की कविता में शोषितों के प्रति संवेदना एवं सहानुभूति का भाव सहज ही दिखाई देता है।

3) निराशा और वेदना की अनुभूति - सामाजिक विषमता को देखकर निराला जी दुखित हो जाया करते थे । यही कारण है कि उनके काव्य में निराशा और वेदना की अनुभूति होती है।

4) रूढ़ि खण्डन - निराला जी की कविताओं में रूढ़ियों का विरोध दिखाई देता है। पुरातन जड़ संस्कारों का निराला ने सर्वदा विरोध किया है इन्होंने पुरानी मान्यताओं को नहीं स्वीकार किया।

5) राष्ट्र का आह्वान - कवि विषमता को दूर करने के लिए राष्ट्र का आह्वान करता है। जब तक समाज से विषमता समाप्त नहीं होगी तबतक साम्यवाद सम्भव नहीं है।

6) साम्राज्यवाद, सामन्तवाद एवं पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति विद्रोह - सामन्तवादी व्यवस्था सदैव समानता की विरोधी रही है। पण्डितों, मठाधीशों, मुल्लो और पादरियों ने धन के लालच में इन्हीं का सदैव समर्थन किया है। 'कुकुरमुत्ता' शीर्षक कविता में निराला ने पूँजीपतियों पर करारा व्यंग्य किया है।

निष्कर्षत: निराला जी ने सामाजिक विषमता,विवशता, पराधीनता, शोषण आदि पर तीखे व्यंग्य किये है| जिससे यह सिद्ध होता हो कि निराला जी एक प्रगति वादी कवि है |